ओमप्रकाश वाल्मीकि की काव्य संवेदना

पद्म भूषण प्रताप सिंह
शोधछात्र, हिन्दी विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

साहित्य के अन्तर्गत किसी भी विधा से जुड़े रचनाकार या साहित्यकार की समस्त रचनात्मक गतिविधयाँ कहीं न कहीं उसके परिवेश, देशकाल एवं उसकी परिस्थिति से प्रभावित होती है। कवि का व्यक्तित्व अपेक्षाकृत संवेदनशील होता है। अतएव युग बोध का प्रभाव उसकी कविताओं के माध्यम से बेहतर ढंग से अभिव्यक्त होता है। ओमप्रकाश वाल्मीकि के माध्यम से बेहतर ढंग से अभिव्यक्त होता है। ओमप्रकाश वाल्मीकि का सम्पूर्ण काव्य भी इससे इतर नहीं है। वास्तव में जब हम दलित कविताओं पर दृष्टिपात करते हैं तो पता चलता है कि महज दलित समाज से जुड़ने के कारण उसका महत्व नहीं है बल्कि वह इस अर्थ में महत्वपूर्ण जान पड़ती है कि यह सामाजिक–सरोकारों से जुड़ने के साथ सामंतवादी व्यवस्था से सीधे तौर पर टकराती हुई प्रतीत होती है। ओमप्रकाश वाल्मीकि की अधिकांश कविताएं भी इसी शोषण मूलक तन्त्र पर प्रहार करती हैं। ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविताओं को पढ़कर उनके दलित समाज से जुड़ाव को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। यह स्वाभाविक भी है क्योंकि वर्तमान में स्वतन्त्रता प्राप्ति के लम्बे अन्तराल के बाद भी हमारे परिवेश में कुछ रूढ़िगत मान्यताएं अभी भी जीवित हैं। इसी यथार्थपरकता एवं संताप का चित्रण वे अपनी कविताओं के माध्यम से करते हैं। इनका एक प्रमुख काव्य संकलन ही 'सदियों के संताप' नाम से है। नाम से ही स्पष्ट है कि लम्बे समय से चली आ रही सामंतवादी व्यवस्था द्वारा शोषित वर्ग को कितना प्रताड़ित किया गया है। यद्यपि इनका लेखन क्षेत्र व्यापक है और साहित्य की विविध विधाओं जैस कहानी, कविता एवं आत्मकथा में इन्होंने पर्याप्त लेखन किया है, किन्तु इनकी संवेदनशीलता सर्वाधिक कुशल स्तर पर कविताओं में ही देखी जा सकती है। मूलतः इनकी कविताओं के जरिये ही इनकी काव्य संवेदना के मूल बिन्दुओं की तलाश की जा सकती है। जब वे सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति करते हुए 'ठाकुर का कुआँ' जैसी कविता लिखते हैं तो इनका दायित्वबोध बहुत ही श्रेष्ठ अर्थों में उभरकर आता है। आजादी के पश्चात् भी आजादी न मिलने की जो कसक है वह इस कविता में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। कुछ इसी तरह का बोध

प्रेमचन्द की कहानी 'ठाकुर का कुआँ' में भी दिखाई देता है। यद्यपि इन दोनों के रचनाकाल में लम्बी समयावधि का अन्तराल है किन्तु प्रभाव एवं संवेदना के स्तर पर ये दोनों एक ही जैसी प्रतीत होती है। वास्तव में इस दुखद पहलू को कविता के जरिये ओमप्रकाश वाल्मीकि अधिक संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करते हैं। जब हम शोषक वर्ग की चर्चा कर रहे हैं तो इनकी कविता 'उन्हें डर है' की मूल अर्न्तवस्तु भी कहीं न कहीं इसी पहलू को उजागर करती हुई प्रतीत होती है। पूँजीपतियों द्वारा लम्बे समय से चली आ रही शोषण की परम्परा को दर्शाने में यह कविता बखूबी सफल प्रतीत होती है। वास्तव में दलितों के प्रति जिस अमानवीयता या भेदभाव का व्यवहार किया जा रहा है उसके प्रति कवि पूरी तरह सजग है। इसी वजह से कही कही इनके काव्य में चेतना का स्वर भी देखा जा सकता है। 'चोर' कविता की कुछ पंक्तियाँ उद्धृत हैं–

"आग में तपकर लोहा नर्म पड़ जाता है।
ढल जाता है मनचाहे आकार में, हथौड़े की चोट से
एक तुम हो जिस पर किसी चोट का असर नहीं होता"।।

साफ तौर पर द्रष्टव्य है कि कवि ने यहाँ प्रतीकात्मक अर्थों में शोषक एवं शोषित दोनों का चित्रण किया है एवं एक प्रकार की चेतना उत्पन्न करने का प्रयास किया है। ऐसे ही दलितों के दुखद पहलू एवं उनकी बेबसी का चित्रण वे 'युग–चेतना' कविता में करते हैं–

"मै खटता खेतों में
फिर भी भूखा हूँ,
निर्माता मैं महलों का, फिर भी निष्कासित हूँ, प्रताड़ित हूँ।

जाहिर है यहाँ कवि ने उसी प्रताड़ना के दंश को दिखाने का प्रयास किया है जो उसे सदियों से मिलते चले आ रहे हैं। किस तरह से समाज के एक वर्ग के द्वारा दूसरे वर्ग के प्रति अमानवीयता एवं बर्बरता का भाव व्याप्त है उसकी व्यथा को ये 'युग चेतना' के माध्यम से कुशलतम रूप में अभिव्यक्त करते हैं।

जब बात कवि की काव्य संवेदना के सन्दर्भ में हो तो कवि द्वारा उल्लिखित अन्य विषयों पर चर्चा करना स्वाभाविक है। यद्यपि इन्होंने अपनी अधिकांश कविताएं समाजिक जीवनमूल्यों को ही

आधार बनाकर लिखी है इसके अतिरिक्त भी इन्होंने जाति एवं वर्ग सम्बन्धी विषयों को भी कविता के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। इस सम्बन्ध में कुछ इनकी पक्तियाँ उद्धृत हैं–

"बाहें फड़कती हैं जिह्वा मचलती है।

प्रगति अवरुद्ध,

जाति व्यवस्था के बन्धन में अतीत, शोषित, प्रताड़ित

इतिहास गहन अंधकार में डूब गया है।"

वास्तव में यह जाति व्यवस्था समूची मानवीयता के कितने वीभत्स एवं अमानवीय रूप को उजागर करती है। वर्तमान में भी महज जाति के आधार पर ही दलितों को कितने अपमानजनक व्यवहार का सामना करना पड़ता है। अतएव यहाँ पर कवि का समाज के इस पक्ष पर भी ध्यान आकर्षित हुआ है। निर्विवाद रूप से यह आज के भारतीय समाज का कटु यथार्थ है जिससे निजात पाने की कवि कवायद करता है। अब यहाँ महत्वपूर्ण बात यह कहीं न कहीं यह भी है कि सम्पूर्ण दलित साहित्य के विद्रोह के स्वर पार्श्व में यह सामाजिक–भेदभाव एवं जाति व्यवस्था है। इसलिए वर्तमान दलित साहित्य निरन्तर शिक्षा को महत्व प्रदान कर समतामूलक समाज की स्थापना चाहता है। यही वजह है कि ओमप्रकाश वाल्मीकि का काव्य अन्य विषयों पर भी हमारा ध्यान आकर्षित करता है। मसलन वर्तमान में प्रासंगिक नारी सम्बन्धी मूल्यों पर इनकी पैनी नज़र है। सदियों से दलित नारी की स्थिति आज भी कितनी दुर्बल एवं पिछड़ी हुई है उसी का चित्रण ये अपनी कविता 'झाड़ूवाली' के माध्यम से करते हैं। अपने मूल अर्थों में यह कविता स्पष्ट यही बयां करती है कि दलित स्त्री को बस अपने कर्म में रत रहना है एवं उसका स्वयं का कोई अस्तित्व नहीं है। निश्चत रूप से ओमप्रकाश वाल्मीकि की यह कविता यथार्थपरकता को सही अर्थों में दर्शाती है।

अपी एक अन्य कविता 'ज्वालामुखी' के माध्यम से कवि ने सुखी एवं शोषक वर्ग को व्यंग्यात्मकता के साथ प्रस्तुत किया है। कविता की कुछ पंक्तियाँ उद्धृत हैं–

"ऊँची–ऊँची अट्टालिकाओं के कहकहे

चौराहे पर गाँधी का पुतला

गलियों में, समाजवाद का नारा

मेरा मन बहला रहा है।"

निश्चित रूप से स्वतन्त्रता प्राप्ति के इतने समय बाद भी राष्ट्र में समाज के दो अलग–अलग रूप बड़े फासले के साथ व्याप्त है। इसी सत्ताधारी एवं शोषक तन्त्र के मूल्यों में हो रहे पतन को कवि बहुत ही सजगता से प्रस्तुत करता है। वास्तव में ओमप्रकाश वाल्मीकि का सम्पूर्ण काव्य मानवीय मूल्यों के क्षय एवं व्यवस्था की खामियों को ही उजागर करता हुआ द्रष्टव्य होता है। समाज में व्याप्त असमानता एवं वर्ग–विभाजन को कवि निम्न पंक्तियों के माध्यम से स्पष्ट रूप से उद्धृत करता है–

"जिस रास्ते चलकर तुम पहुँचे हो इस धरती पर
उसी रास्ते चलकर आया मैं भी
फिर तुम्हारा कद इतना ऊँचा
कि आसमान छू लेते हो आसानी से
और मेरा कद इतना छोटा कि मैं छू नहीं सकता जमीन भी"।

निश्चय ही इन पंक्तियों में कवि की वेदना की समर्थ अभिव्यक्ति देखी जा सकती है। ऐसे ही संवेदना की मार्मिकता को कवि एक दूसरी कविता में कुछ यूँ उकेरता है–

"भूल जाना चाहता हूँ बरसात की अँधेरी रातें
जब रात भर जाग–जागकर,
महसूस किया मैंने टपकती छत का विद्रूप
माँ की आँखों"।

यहाँ हम देख सकते हैं कि कवि की काव्य–सर्जना अलग प्रकार के कलात्मक तत्वों के साथ अभिव्यक्त हुई है जिसमें वेदना के साथ–साथ मार्मिकता का बेजोड़ चित्रण हुआ है।

पूँजीपतियों और सामंती व्यवस्था के पोषकों पर कवि 'जुगनू' शीर्षक कविता के माध्यम से करारा प्रहार करते हैं। कुछ पंक्तियाँ उद्धृत हैं–

"रोशनी के खरीददार एक दिन छीन लेंगे जुगनू से
उसकी यह छवि सी चमक भी बंद कर लेंगे तिजोरी में
जो बेची जाएगी बाजार में उँचे दामों पर,
संस्कृति का लोगो चिपकाकार"।

ये तमाम कविताएं खण्डित हो रही मानवता एवं व्यवस्था की खामियों को उजागर कर रही हैं। अतएव ऐसे में कवि बदहाल सामाजिक व्यवस्था की बीमार जड़ों को उजागर कर शोषित वर्ग में भी एक प्रकार से चेतना जागृत करने का कार्य करते हैं।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि ओमप्रकाश वाल्मीकि एक ऐसे कवि के रूप में उभरकर हमारे सम्मुख प्रस्तुत होते हैं जिनकी दृष्टि समाज के सभी पिछड़े वर्गों के प्रति ही सूक्ष्म एवं यथार्थपरक रही है। बात युगबोध की प्रवृत्ति की हो या अभिव्यक्ति की कुशलता की, ओमप्रकाश वाल्मीकि सभी स्तरों पर एक समर्थ कवि के रूप में प्रकट होते हैं। अतएव वर्तमान में विशेषकर दलित साहित्य के लिहाज से ओमप्रकाश वाल्मीकि एक महत्वपूर्ण स्थान पर सहज रूप से स्थापित होते दिखाई देते हैं।

सन्दर्भ–ग्रन्थ–सूची

1. बस्स बहुत हो चुका (कविता संग्रह)– ओमप्रकाश वाल्मीकि, गौतम बुक सेन्टर, नई दिल्ली।
2. सदियों का संताप (कविता संग्रह)– ओमप्रकाश वाल्मीकि, गौतम बुक सेन्टर, नई दिल्ली।
3. दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र–शरण कुमार लिम्बाले, वाणी प्रकाशन।
4. दलित साहित्य एक अंतर्यात्रा–बजरंग बिहारी तिवारी, नवारूढ़ प्रकाशन, गाजियाबाद।
5. दलित साहित्य अनुभव, संघर्ष एवं यथार्थ–ओमप्रकाश वाल्मीकि, राधाकृष्ण प्रकाशन।